मूल्य 10 रु.

वर्ष 04 | अंक 05 | मई 2022 | वार्षिक मूल्य 100 रु. | पृष्ठ 24

समाचार पत्र पंजी. संख्या : DELHIN/2018/76804

इन्द्रप्रस्थ संवाद

अक्षय तृतीया

मंगलवार 3 मई 2022 को है
अक्षय तृतीया का पावन पर्व

अंन्दर के पृष्ठों में

अक्षय तृतीया	पृष्ठ 04
बुद्ध पूर्णिमा : महात्मा बुद्ध जयंती	पृष्ठ 06
सावरकर – एक सामाजिक क्रांतिकारी	पृष्ठ 07
बांग्लादेशी एवं रोहिंग्या घुसपैठिए बन गए है देश की सुरक्षा के लिए खतरा	पृष्ठ 09
पृथ्वीराज चौहान के किला राय पिथौरा के बदायूं दरवाजे को ढूंढेगा एएसआई	पृष्ठ 10
अनंगताल को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करने की योजना	पृष्ठ 11
500 वर्ष पुराना है नजफगढ़ का ठाकुरद्वारा मंदिर	पृष्ठ 12
आयुष्मान भारत डिजिटल मिशनरू हेल्थ सेक्टर में डिजिटल इकोसिस्टम, ऐसे बनेगा हेल्थ कार्ड	पृष्ठ 13
लिखने का शौक है तो बने वेब राइटर	पृष्ठ 15
बार-बार लगती है प्यास और सूखता है गला तो हो जाएँ सावधान!	पृष्ठ 16
भारत की आज़ादी के संघर्ष का बीज 1857 में बोया गया	पृष्ठ 17
दिमाग का कसरत	पृष्ठ 17
आदिगुरू शंकराचार्य जंयती	पृष्ठ 18
जेएनयू में नवरात्र में मांसाहार के पीछे का आई आईसा	पृष्ठ 20
बोध कथा	पृष्ठ 21
बच्चों के लिए 'उनमुक्त गगन ड्राईग प्रतियोगिता' का आयोजन	पृष्ठ 22
गीत : चन्दन है इस देश की माटी	पृष्ठ 23

22 बच्चों के लिए 'उन्मुक्त गगन ड्रॉइंग प्रतियोगिता' का आयोजन

धर्म, समाज एवं राष्ट्र के उत्थान में सभी का जुड़ना है आवश्यक

इस माह का आरम्भ अक्षय तृतीया के पावन पर्व से हो रहा है।अक्षय तृतीया का पावन पर्व वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाया जाता है, जो इस बार 03 मई, मंगलवार को है। मान्यता है कि त्रेता और सतयुग का आरंभ भी इसी तिथि को हुआ था।यह तिथि सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाली एवं सभी सुखों को प्रदान करने वाली मानी गई है।अक्षय का अर्थ होता है "जो कभी खत्म ना हो" और इसीलिए ऐसा कहा जाता है कि अक्षय तृतीया वह तिथि है जिसमें सौभाग्य और शुभ फल का कभी क्षय नहीं होता।अक्षय तृतीया वसंत ऋतु के अंत और ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ का दिन भी है इसलिए अक्षय तृतीया के दिनगर्मी में लाभकारी वस्तुओं का दान महा पुण्यकारी माना गया है।

अक्षय तृतीया के दिन भगवान परशुराम के रूप में विष्णुजी छठवीं बार धरती पर अवतरित हुए थे, इसीलिए यह दिन परशुराम के जन्मदिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

भगवान का बहुत ही सुखद संयोग है की इस माह कई महापुरुषों की जन्म जयंती है जिन्होंने भारतवर्ष, हिन्दू समाज एवं संपूर्ण मानव समाज को ज्ञान का मार्ग दिखाया।

इस वर्ष आदि शंकराचार्य जयंती 6 मई 2022 को मनाई जाएगी।उनकी शिक्षाओं और दर्शन ने हिन्दू धर्म को अत्यंत प्रभावित किया है। शंकराचार्य ने हिंदू धर्म के पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।आदि शंकराचार्यने भारत की भौगोलिक एकता स्थापित करने के बड़े और लंबे समय तक चलने वाले उद्देश्य के साथ चार मठों की स्थापना की– श्रिंगेरीशारदापीठम, द्वारिका पीठ, ज्योतिर्मठपीठम और गोवर्धन मठ।

महात्मा बुद्ध की जन्म जयंती को हम बुद्ध पूर्णिमा के रूप में मनाते है। इस वर्ष बुद्ध पूर्णिमा सोमवार 16 मई 2022 को मनाई जाएगी।

राजपरिवार में जन्मे सिद्धार्थ (बुद्ध) को राज्य, पत्नी, पुत्र एवं अन्य पारिवारिक जन आदि अपनी साधना के मार्ग में अवरोध जैसे लगने लगे। इस प्रकार तीस वर्ष की आयु में एक रात्रि के समय सभी को सोता हुआ छोड़कर सिद्धार्थ राजभवन को त्यागकर वन में चले गए।6 वर्ष की कठोर साधना के बाद गया (बिहार) में एक पीपल के पेड़ के नीचे गहन समाधि के बाद उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। इस बोध पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति के बाद सिद्धार्थ अब 'भगवान बुद्ध' कहलाने लगे।भारत में सांस्कृतिक उत्थान का एक नया युग प्रारंभ हो गया।

भगवान बुद्धने सैकड़ों वर्षों से व्याप्त रूढ़ियों, अंधविश्वासों, भेदभावों तथा अनेकानेक जड़ मान्यताओं को नकार दिया।उन्होंने मनुष्य की मर्यादा को यह कहकर ऊपर उठाया कि कोई मनुष्य केवल ब्राह्मण कुल में जन्म लेने से पूज्य नही होता।उच्चता या नीचता, जन्म पर नहीं,कर्म पर निर्भर है।भगवान् बुद्ध ने जन्म से किसी भी प्रकार के जाति एवं वर्ण–भेद को अपने जीवन में स्थान नही दिया।

श्त्याग और तप की प्रतिमूर्तिश विनायक दामोदर सावरकर 'वीर सावरकर' की जन्म जयंती 28 मई 2022 को है।बचपन से ही क्रांतिकारी विचारों से ओतप्रोत थे और हिंदुत्व के पक्के पैरोकार थे। उन्होंने रत्नागिरी में अस्पृश्यता को खत्म करने के लिए काम किया और सभी जातियों के हिंदुओं के साथ खाना खाने की परंपरा भी शुरू की।हिंदुत्व और हिंदू राष्ट्र के सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने वाले सावरकर सामाजिक क्रांतिकारी भी थे।

यह हमारा सौभाग्य है की हम ऐसे भारतवर्ष में रह रहे है जहाँ ऐसे दृ ऐसे महापुरुषों ने जन्म लिया। अब बस जरूरत है उनके दिखाए मार्गों का अनुसरण कर धर्म, समाज एवं राष्ट्र के उत्थान में जुड़ जाने की।

संपादक : अरविन्द कुमार मिश्रा

प्रबंधक, मुद्रक प्रकाशक : रघुवीर कुमार गम्भीर

संपादकीय कार्यालय
93, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली – 11

प्रसार एवं विज्ञापन हेतु संपर्क
ivskdelhi@gmail.com

इंद्रप्रस्थ विश्व संवाद केंद्र के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक रघुवीर कुमार गम्भीर द्वारा एम.के प्रिंटर्स
5516/5 न्यू चंद्रावल, दिल्ली–7 से मुद्रित एवं 8–बी/6428–29
आर्य समाज रोड, देवनगर, नई दिल्ली–110005 से प्रकाशित
संपादक : अरविन्द कुमार मिश्रा

सभी लेखों में लेखकों के स्वतंत्र विचार हैं। संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

अक्षय तृतीया

मंगलवार 3 मई 2022 को है
अक्षय तृतीया का पावन पर्व

अक्षय तृतीया का पावन पर्व वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाया जाता है। यह पर्व इस बार 03 मई, मंगलवार को मनाया जाएगा। मान्यता है कि त्रेता और सतयुग का आरंभ भी इसी तिथि को हुआ था, इसलिए इसे कृतयुगादि तृतीया भी कहते हैं। अनेकों शास्त्रों के अनुसार इस दिन स्नान, दान, जप, होम, स्वाध्याय, तर्पण आदि जो भी कर्म किए जाते हैं वे सब अक्षय हो जाते हैं। यह तिथि सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाली एवं सभी सुखों को प्रदान करने वाली मानी गई है। इस तिथि की अधिष्ठात्री देवी पार्वती हैं। अक्षय का अर्थ होता है "जो कभी खत्म ना हो" और इसीलिए ऐसा कहा जाता है कि अक्षय तृतीया वह तिथि है जिसमें सौभाग्य और शुभ फल का कभी क्षय नहीं होता। इस दिन होने वाले कार्य मनुष्य के जीवन को कभी न खत्म होने वाले शुभ फल प्रदान करते हैं। इसलिए यह कहा जाता है, कि इस दिन मनुष्य जितने भी पुण्य कर्म तथा दान करता है उसे, उसका शुभ फल अधिक मात्रा में मिलता है और शुभ फल का प्रभाव कभी खत्म नहीं होता है।

स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त है यह तिथि

बिना पंचांग देखे भी इस दिन कोई भी शुभ मांगलिक कार्य जैसे विवाह, गृह प्रवेश, घर, भूखंड या वाहन आदि की खरीदारी से सम्बंधित कार्य किए जा सकते हैं। तृतीया तिथि को पार्वती जी ने अमोघ फल देने की सामर्थ्य का आशीर्वाद दिया था। उस आशीर्वाद के प्रभाव से इस तिथि को किया गया कोई भी कार्य निष्फल नहीं होता। व्यापार आरम्भ, गृह प्रवेश, वैवाहिक कार्य, सकाम अनुष्ठान, दान–पुण्य, पूजा–पाठ अक्षय रहता है अर्थात वह कभी नष्ट नहीं होता।

दान करने से मिलता है पुण्य

अक्षय तृतीया वसंत ऋतु के अंत और ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ का दिन भी है इसलिए अक्षय तृतीया के दिन जलभरे से घड़े, कुल्हड़, सकोरे, पंखे, पादुका, चटाई, छाता, चावल, नमक, घी, ख़रबूज़ा, ककड़ी, मिश्री, सत्तू आदि गर्मी में लाभकारी वस्तुओं का दान महा पुण्यकारी माना गया है। लक्ष्मीनारायण के साथ–साथ ही सुख–सौभाग्य– समृद्धि हेतु इस दिन भगवान शिव और माता पार्वती जी का पूजन भी किया जाता है।

शास्त्रों के अनुसार इस माह में प्याऊ लगाना, छायादार वृक्ष की रक्षा करना, पशु–पक्षियों के खान–पान की व्यवस्था करना, राहगीरों को जल पिलाना जैसे सत्कर्म मनुष्य के जीवन को समृद्धि के पथ पर ले जाते हैं। स्कंद पुराण के अनुसार इस माह में जल दान का सर्वाधिक महत्व है अर्थात अनेकों तीर्थ करने से जो फल प्राप्त होता है वह केवल वैशाख मास में जलदान करने से प्राप्त हो जाता है। इसके अलावा छाया चाहने वालों को छाता दान करना और पंखे की इच्छा रखने वालों को पंखा दान करने से ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों देवों का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

हिन्दू मान्यताएँ :

अखाती तीज के पीछे कई हिन्दू मान्यताएँ हैं। कुछ इसे भगवान विष्णु के जन्म से जोड़ती हैं, तो कुछ इसे भगवान कृष्ण की लीला से। सभी मान्यताएँ आस्था से जुड़ी होने के साथ साथ बहूत रोचक भी हैं।

1. यह दिन पृथ्वी के रक्षक श्री विष्णुजी को समर्पित है। हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार विष्णुजी ने श्री परशुराम के रूप में धरती पर अवतार लिया था। इस दिन परशुराम के रूप में विष्णुजी छटवी बार धरती पर अवतरित हुए थे, और इसीलिए यह दिन परशुराम के जन्मदिवस के रूप में भी मनाया जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार विष्णुजी त्रेता एवं द्वापरयुग तक पृथ्वी पर चिरंजीवी (अमर) रहे। परशुराम सप्तऋषि में से एक ऋषि जमदगनी तथा रेणुका के पुत्र थे। यह ब्राह्मण कुल में जन्मे और इसीलिए अक्षय तृतीय तथा परशुराम जयंती को सभी हिन्दू बड़े धूमधाम से मनाते हैं।
2. यह दिन रसोई एवं भोजन की देवी माँ अन्नपूर्णा का जन्मदिन भी माना जाता है। अक्षय तृतीया के दिन माँ अन्नपूर्णा का भी पूजन किया जाता है और माँ से भंडारे भरपूर रखने का वरदान मांगा जाता है। अन्नपूर्णा के पूजन से रसोई तथा भोजन में स्वाद बढ़ जाता है।
3. दक्षिण प्रांत में इस दिन की अलग ही मान्यता है। उनके अनुसार इस दिन कुबेर (भगवान के दरबार का खजांची) ने शिवपुरम नामक जगह पर शिव की आराधना कर उन्हें प्रसन्न किया था। कुबेर की तपस्या से प्रसन्न हो कर शिवजी ने कुबेर से वर मांगने को कहा। कुबेर ने अपना धन एवं संपत्ति लक्ष्मीजी से पुनः प्राप्त करने का वरदान मांगा। तभी शंकरजी ने कुबेर को लक्ष्मीजी का पूजन करने की सलाह दी। इसीलिए तब से ले कर आजतक अक्षय तृतीया पर लक्ष्मीजी का पूजन किया जाता है। लक्ष्मी विष्णुपत्नी हैं, इसीलिए लक्ष्मीजी के पूजन के पहले भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। दक्षिण में इस दिन लक्ष्मी यंत्रम की पूजा की जाती है, जिसमें विष्णु, लक्ष्मीजी के साथ–साथ कुबेर का भी चित्र रहता है।
4. अक्षय तृतीया के दिन ही महर्षि वेदव्यास ने महाभारत लिखना आरंभ की थी। इसी दिन महाभारत के युधिष्ठिर को "अक्षय पात्र" की प्राप्ति हुई थी। इस अक्षय पात्र की विशेषता थी, कि इसमें से कभी भोजन समाप्त नहीं होता था। इस पात्र के द्वारा युधिष्ठिर अपने राज्य के निर्धन एवं भूखे लोगों को भोजन दे कर उनकी सहायता करते थे। इसी मान्यता के आधार पर इस दिन किए जाने वाले दान का पुण्य भी अक्षय माना जाता है, अर्थात इस दिन मिलने वाला पुण्य कभी खत्म नहीं होता। यह मनुष्य के भाग्य को सालों साल बढाता है।
5. महाभारत में अक्षय तृतीया की एक और कथा प्रचलित है। इसी दिन दुशासन ने द्रौपदी का चीरहरण किया था। द्रौपदी को इस चीरहरण से बचाने के लिए श्री कृष्ण ने कभी न खत्म होने वाली साड़ी का दान किया था।
6. अक्षय तृतीया के पीछे हिंदुओं की एक और रोचक मान्यता है। जब श्री कृष्ण ने धरती पर जन्म लिया, तब अक्षय तृतीया के दिन उनके निर्धन मित्र सुदामा, कृष्ण से मिलने पहुंचे। सुदामा के पास कृष्ण को देने के लिए सिर्फ चार चावल के दाने थे, वही सुदामा ने कृष्ण के चरणों में अर्पित कर दिये। परंतु अपने मित्र एवं सबके हृदय की जानने वाले अंतर्यामी भगवान सब कुछ समझ गए और उन्होने सुदामा की निर्धनता को दूर करते हुए उसकी झोपड़ी को महल में परिवर्तित कर दिया और उसे सब सुविधाओं से सम्पन्न बना दिया। तब से अक्षय तृतीया पर किए गए दान का महत्व बढ़ गया।
7. भारत के उड़ीसा में अक्षय तृतीया का दिन किसानों के लिए शुभ माना जाता है। इस दिन से ही यहाँ के किसान अपने खेत को जोतना शुरू करते हैं। इस दिन उड़ीसा के जगन्नाथपूरी से रथयात्रा भी निकाली जाती है।
8. अलग अलग प्रांत में इस दिन का अपना अलग ही महत्व है। बंगाल में इस दिन गणेशजी तथा लक्ष्मीजी का पूजन कर सभी व्यापारी द्वारा अपनी लेखा जोखा (ऑडिट बूक) की किताब शुरू करने की प्रथा है। इसे यहाँ "हलखता" कहते हैं।
9. पंजाब में भी इस दिन का बहुत महत्व है। इस दिन को नए मौसम के आगाज का सूचक माना जाता है। इस अक्षय तृतीया के दिन जाट परिवार का पुरुष सदस्य ब्रह्म मुहूर्त में अपने खेत की ओर जाते हैं। उस रास्ते में जितने अधिक जानवर एवं पक्षी मिलते हैं, उतना ही फसल तथा बरसात के लिए शुभ शगुन माना जाता है।

महात्मा बुद्ध जयंती

सोमवार 16 मई 2022 को मनाई जाएगी बुद्ध पूर्णिमा

महात्मा बुद्ध का जन्म लगभग 2500 वर्ष पूर्व (563 वर्ष ई. पू.), हिन्दू पंचांग के अनुसार वैशाख पूर्णिमा को (वर्तमान में दक्षिण मध्य नेपाल) की तराई में स्थित लुम्बिनी नामक वन में हुआ पिता का नाम – राजा शुद्धोधन उनकी माता का नाम – माया। महात्मा बुद्ध की जन्म जयंती को हम बुद्ध पूर्णिमा के रूप में मनाते है। इस वर्ष बुद्ध पूर्णिमा सोमवार 16 मई 2022 को मनाई जाएगी। बुद्ध के गर्भ में आते ही राजपरिवार को सुख समृद्धि होने लगी इसलिए उनका नाम 'सिद्धार्थ' रखा गया। राजा शुद्धोधन ने राजकुमार का नामकरण समारोह आयोजित किया और आठ विद्वानों को उनका भविष्य जानने के लिए आमंत्रित किया। उपस्थित सभी विद्वानों ने एक सी भविष्यवाणी की 'यह बालक महायोगी बनेगा।

भगवान बुद्ध का विवाह यशोधरा नामक कन्या से से हुआ। परन्तु उनका सांसारिक जीवन में मन नहीं लगा। बुद्ध को राज्य, पत्नी, पुत्र एवं अन्य पारिवारिक जन आदि अपनी साधना के मार्ग में अवरोध जैसे लगने लगे। इस प्रकार तीस वर्ष की आयु में एक रात्रि के समय सभी को सोता हुआ छोड़कर सिद्धार्थ राजभवन को त्यागकर वन में चले गए। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक जन्म तथा मृत्यु के रहस्य को नही समझ लूँगा तब तक इस कपिलवस्तु नगर में प्रवेश नही करूंगा।

6 वर्ष की कठोर साधना के बाद गया (बिहार) में एक पीपल के पेड़ के नीचे गहन समाधि के बाद उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। इस बोध पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति के बाद सिद्धार्थ अब 'भगवान बुद्ध' कहलाने लगे। वाराणसी के निकट सारनाथ नामक स्थान पर भगवान बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया। भगवान बुद्ध चवालीस वर्षों तक निरंतर उपदेश करते हुए वे भ्रमण करते रहे। उन्होंने सैकड़ों वर्षों से व्याप्त रूढ़ियों, अंधविश्वासों, भेदभावों तथा अनेकानेक जड़ मान्यताओं को अमान्य कर दिया।

भगवान बुद्ध द्वारा दिए उपदेशों ने व्यर्थ आडम्बर से रहित साधना–पद्धति

ने दुखों से मुक्त होने का एक नया एवं सरल मार्ग दिखलाया और देखते ही देखते बौद्धमत सम्पूर्ण भारत के साथ–साथ भारतवर्ष की सीमाओं को लांगते हुए नेपाल, तिब्बत, बर्मा, वियतनाम, चीन, जापान, मंगोलिया, लंका, कोरिया, जावा सुमात्रा में फ़ैल गया। उस दौरान भारतीय धर्म, दर्शन, कला, साहित्य सृजन एवं शिक्षा व्यवस्था को नये–नये आयाम प्राप्त हुए। उसी समय तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, ओदंतपुरी मगध के विश्विद्यालियों ने विश्व प्रसिद्धि प्राप्त की।

भारत में सांस्कृतिक उत्थान का एक नया युग प्रारंभ हो गया। भगवान् बुद्ध के विचारों के साथ–साथ ग्रन्थलेखन, मूर्तिकला, स्तूप निर्माण, मठ स्थापना, गुफाओं में भित्ति प्रतिमाओं आदि का सर्व दूर विकास हुआ। भगवान् बुद्ध का कहना था कि इस संसार में कुछ भी स्थिर नही सभी कुछ नाशवान है, सभी प्रकार के प्राणी चाहे वे उत्तम, मध्य या नीच जो भी हो सभी का विनाश सुनिश्चित है। उन्होंने मनुष्य की मर्यादा को यह कहकर उपर उठाया कि कोई मनुष्य केवल ब्राह्मण कुल में जन्म लेने से पूज्य नही होता। उच्चता या नीचता, जन्म पर नही, कर्म पर निर्भर है। भगवान् बुद्ध ने जन्म से किसी भी प्रकार के जाति एवं वर्ण–भेद को अपने जीवन में स्थान नही दिया।

अस्सी वर्ष की आयु में कुशीनगर में उन्होंने अपना अंतिम सन्देश दिया और वहीं एक वृक्ष के नीचे अपना शरीर त्याग दिया।

पवित्र स्थान

बौद्ध धर्म में चार स्थान अत्यंत पवित्र माने जाते हैं –

- *पहला–स्थान कपिलवस्तु, जहाँ बुद्ध का जन्म हुआ*
- *दूसरा–बौद्ध गया, जहाँ बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ*
- *तीसरा –सारनाथ, जहाँ बुद्ध ने पहला प्रवचन दिया और*
- *चौथा स्थान – कुशीनगर, जहाँ उन्होंने शरीर त्याग दिया*

सावरकर
एक सामाजिक क्रांतिकारी

"त्याग और तप की प्रतिमूर्ति" विनायक दामोदर सावरकर 'वीर सावरकर' का जन्म 28 मई 1883 को ब्रिटिश भारत के नासिक जिले के भागुर में हुआ था। उनका जन्म एक ब्राह्मण हिंदू परिवार में हुआ था बचपन से ही क्रांतिकारी विचारों से ओतप्रोत थे और हिंदुत्व के पक्के पैरोकार थे। उन्होंने रत्नागिरी में अस्पृश्यता को खत्म करने के लिए काम किया और सभी जातियों के हिंदुओं के साथ खाना खाने की परंपरा भी शुरू की।

सामाजिक क्रांतिकारी सावरकर

हिंदुत्व और हिंदू राष्ट्र के सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने वाले सावरकर सामाजिक क्रांतिकारी भी थे। अम्बेडकर की जीवनी लिखने वाले धनंजय कीर ने समाज सुधारक और सामाजिक क्रांतिकारी के भेद के बारे में लिखा है। कीर का कहना है कि "एक समाज सुधारक उसकी पुनर्रचना करता है जो पहले से मौजूद है जबकि सामाजिक क्रांतिकारी पुरानी व्यवस्था को भंग कर नए सिरे से व्यवस्था की रचना करता है।" सावरकर केवल समाज सुधारक नहीं थे, वह सामाजिक क्रांतिकारी थे।

पतितपावन मंदिर

सावरकर किसी विचार को अपने आचरण में उतार कर आदर्श प्रस्तुत करने वाले बुद्धिजीवी थे। इसीलिए उन्होंने न केवल लेखनी के माध्यम से अपनी बात रखी, बल्कि अस्पृश्यता के खिलाफ लड़ाई को अपने कामों से आगे बढ़ाया। मंदिरों में अछूतों के प्रवेश के पक्ष में आंदोलन करते हुए उन्होंने लोगों के बीच विचार स्थापित किया कि अछूत के पूजने से अशुद्ध हो जाने वाला भगवान भगवान नहीं हो सकता। सन् 1925 में सावरकर गुरव जाति के लोगों को यह समझाने में सफल रहे कि वे अछूत जातियों के लोगों को अपने साथ प्रार्थना करने दें। इस अवसर पर सावरकर ने कहा कि

"भगवान की पूजा करना सभी जातियों के हिंदुओं का जन्मसिद्ध अधिकार है। इस अधिकार का प्रयोग करने की अनुमति देना ही असली धार्मिकता है। जब सभी हिंदुओं को एक ही मंदिर में पूजा करने की अनुमति होगी केवल तभी उनमें धर्म और समुदाय के प्रति अपनत्व की भावना विकसित होगी।"

इसके बाद 1927 में सभी के लिए मंदिर प्रवेश के आंदोलन के अगले चरण के रूप में सावरकर ने रत्नागिरी में विभिन्न जातियों के हिंदुओं की एक महासभा का आयोजन किया। इसके बाद 29 नवबंर, 1929 को एक बैठक हुई जिसका उद्देश्य विट्ठल मंदिर के गर्भगृह में तत्कालीन अछूत जातियों को प्रवेश दिलाना था। लोगों को अपनी बात से सहमत करने के कौशल से सावरकर इस बैठक में उपस्थित लोगों को विट्ठल मंदिर के द्वार अछूतों के लिए खोलने को राजी करने में सफल रहे थे।

रत्नागिरि के भिकोजी सेठ कीर मुंबई में ठेकेदारी करते थे। वह जाति से भंडारी और शिव के भक्त थे। लेकिन, चूंकि उन्हें मंदिर में शिव की पूजा करने की अनुमति नहीं थी इसलिए उन्होंने रत्नागिरी किले में अपने लिए एक मंदिर का निर्माण करवाया था। महाशिवरात्रि के दौरान प्रत्येक वर्ष इस मंदिर में एक उत्सव आयोजित किया जाता था। भिकोजी सेठ ने सावरकर को इस त्यौहार में शामिल होने का आमंत्रण भेजा तो उन्होंने कहा कि, "आप अमीर हैं, इसलिए आपने मंदिर बनवा लिया, लेकिन गरीब अछूतों का क्या? उनके पास न तो कोई मंदिर है, न पूजा करने के लिए कोई भगवान। अगर आप ऐसा मंदिर बनवा सकें जहां सभी जातियों के हिंदू एक साथ पूजा कर सकें तो मैं स्वीकार करूंगा कि सनातन धर्म के खिलाफ आपके आक्षेप उचित हैं।"

पतितपावन मंदिर की नींव 10 मार्च 1929 को सावरकर के नेतृत्व में शंकराचार्य डा. कुर्तकोटी की उपस्थिति में रखी गई थी। इसके लिए आर्थिक सहयोग भिकोजी सेठ कीर ने किया था। इस अवसर पर सावरकर ने कहा, "आदर्श स्थिति यह होगी कि काशी विश्वेश्वर, जगन्नाथपुरी, द्वारका, रामेश्वर और अन्य सभी मंदिर सभी जातियों के हिंदुओं के लिए खुले हों। लेकिन, जब तक पूरा समाज इस बात को समग्र रूप से स्वीकार नहीं कर लेता, तब तक मेरी यही इच्छा है कि हमारे पास एक ऐसा मंदिर होना

चाहिए जो सभी हिंदुओं के लिए खुला हो।" पतितपावन मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा सन् 1931 में हुई और इसके संचालक ट्रस्ट में उस समय अछूत मानी जाने वाली जातियों समेत सभी जातियों के लोगों का प्रतिनिधित्व था। पतितपावन मंदिर का निर्माण इस विचार के साथ किया गया था कि इस मंदिर में सामूहिक प्रार्थनाएं शुरू होने पर अन्य मंदिरों में प्रचलित समस्याओं का भी समाधान होगा।

पतितपावन मंदिर में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य समुदाय के बच्चों के साथ महार, चम्भर, भंगी आदि समुदायों के बच्चों को संस्कृत ऋचाओं का अभ्यास कराया जाता था। पूरे हिंदू समुदाय के अनुष्ठान के रूप में यहां विष्णु की मूर्ति का अभिषेक इन्हीं बच्चों द्वारा मंत्रोच्चार के बीच किया जाता था। पतितपावन मंदिर भारत का पहला मंदिर था जहां सभी हिंदुओं को मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश की अनुमति थी। यहां "प्रत्येक वह व्यक्ति जो पूजा कर सकता है, पुजारी है" के सिद्धांत का पालन करते हुए यह सुनिश्चित किया गया था कि मंदिर में ब्राह्मणवादी वर्चस्व के लिए जगह न हो।

महाराष्ट्र में महिलाओं के लिए पहला सामुदायिक भोज 21 सितंबर 1931 को पतितपावन मंदिर में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर 75 महिलाएँ उपस्थित थीं। सिर्फ पांच साल बाद, 1935 के गणेश उत्सव के दौरान यह गिनती 400 महिलाओं तक पहुंच गई थी। सावरकर ने 1 मई 1933 को पतितपावन मंदिर परिसर में एक रेस्तरां शुरू किया था जो सभी हिंदुओं के लिए खुला था। पूर्व में अछूत समझे जाने वाले लोग यहाँ भोजन परोसते थे और सावरकर से मिलने आने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह शर्त थी कि उनसे मुलाकात तभी हो सकती है जब आने वाला पहले इस रेस्तरां में चाय पीये. इस रेस्त्रां ने उन जंजीरों को तोड़ने में मदद की कि कैसा खाना खाया जाए। सावरकर की पत्नी माई (यमुना सावरकर) तत्कालीन अछूत समुदायों की महिलाओं के लिए पारंपरिक "हल्दी–कुंकुम" समारोह आयोजित करती थीं।

"टाइम्स ऑफ इंडिया" ने उस घटनाक्रम का समाचार प्रकाशित किया था जिसमें शिवु भंगी (पूर्व में सफाई का काम करने वाली एक जाति) ने धार्मिक प्रवचन किया और ब्राह्मणों ने उनके पैर छुए. रिपोर्ट में कहा गया था कि "रत्नागिरि के पतितपावन मंदिर में, भंगी समुदाय के एक व्यक्ति द्वारा प्रवचन दिए जाने से एक नया मानदंड स्थापित हुआ है। ऊंची जातियों के लोगों ने उसे माला पहनाई और उसके चरणों में अपना सिर रखा। यह अभूतपूर्व घटना सावरकर का महान क्रांतिकारी कदम है।" उस समय धार्मिक ऋचाओं का पाठ करना केवल ब्राह्मणों का विशेषाधिकार समझा जाता था। सन् 1930 में सावरकर ने पतितपावन मंदिर के परिसर में "सर्व हिंदू गणपति महोत्सव" शुरू किया जहां भंगी समुदाय का एक व्यक्ति मंत्रों और धार्मिक भजनों का पाठ करता था। इस घटनाक्रम के बारे में लंदन से प्रकाशित कुछ समाचार पत्रों में समाचार छपे थे। वह सामाजिक सुधारों को इतना महत्व देते थे कि उन्होंने लोगों का आह्वान किया था कि "आप यह भले भूल जाएं कि मैं समुद्र में कूद गया था, लेकिन सामाजिक सुधारों के बारे में मेरे विचारों को न भूलें।"

सावरकर कौन थे?

- एक क्रांतिकारी जिसने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर क्रांतिकारी आंदोलन खड़ा किया।
- महान लेखक जिसकी पुस्तकों को दो देशों की सरकारों ने प्रकाशन के पहले ही प्रतिबंधित कर दिया था।
- एक स्नातक जिसकी उपाधि उसके विश्वविद्यालय ने भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम में भाग लेने के कारण वापस ले ली थी।
- स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के कारण उन्हें बैरिस्टर की उपाधि देने से मना कर दिया गया था।
- एक प्रखर राष्ट्रवादी जिसने आयातित कपड़ों को निडरतापूर्वक सार्वजनिक रूप से जलाया था।
- एक क्रांतिकारी जिसने देश के विकास के प्रति सम्पूर्णतावादी दृष्टिकोण के साथ छुआछूत और जातिवाद का विरोध किया था।
- एक विद्रोही भारतीय नेता जिसने भारत में अंग्रेजी अदालतों के औचित्य को स्वीकारने से मना कर दिया था।
- एक बंदी जिसे 50 साल की सजा सुनाई गई थी और जो जेल से छूटने के बाद भी सक्रियता से अपने काम में लगा रहा।
- महान कवि जिसने जो हाथ लगा उसी के सहारे अपनी कविताएं जेल की दीवारों पर लिख डाली थीं क्योंकि उन्हें लेखन–सामग्री नहीं मिलती थीं। उन्होंने इन कविताओं को अपने जेल के साथियों को याद करा दिया था ताकि जब भी मौका मिले उन्हें प्रकाशित कराया जा सके।
- महान व्यक्ति जिसे जेल भेजा जाना हेग स्थित अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के लिए चौंकाने वाली खबर थी।
- एक योगी जिसने प्रायोपवेश के माध्यम से मृत्यु का वरण किया था. प्रायोपवेश योग की उस क्रिया का नाम है जिसमें सभी इच्छाओं–आकांक्षाओं से मुक्त तथा जीवन के दायित्व पूरे कर चुका कोई व्यक्ति उपवास के माध्यम से अपना जीवन समाप्त करता है।

बांग्लादेशी एवं रोहिंग्या घुसपैठिए बन गए है

देश की सुरक्षा के लिए खतरा

16 अप्रैल 2022 को दिल्ली की जहांगीरपुरी में हनुमान जयंती शोभा यात्रा पर जिस तरह से हमला एवं हिंसा हुई वह इस बात को साबित करता है कि यह महज कोई संयोग नहीं है बल्कि एक बहुत बड़ी साजिश का हिस्सा है। अगर यह घटना सिर्फ जहांगीरपुरी तक सीमित होती तो यह माना जा सकता था की किसी अचानक पैदा हुए वाद विवाद ने हिंसक रूप ले लिया होगा। लेकिन यह मामला इतना सरल नहीं है। जिस तरह पूरे देश में रामनवमी शोभा यात्राओं पर हमले हुए और उसके बाद दिल्ली में हनुमान जयंती शोभा यात्रा पर हमला हुआ वह बहुत बड़ी साजिश की तरफ इशारा करता है। देशभर से ऐसी घटनाओं में लगातार कटरपंथी मुस्लिम संगठन पीएफआई की संदिग्ध भूमिका सामने आ रही है।

अगर यह अचानक हुई घटना है तो पहले से ही बोतलें, पत्थर, ज्वलनशील पदार्थ व हथियार इत्यादि कैसे इकट्ठा हो रहे थे और मस्जिदों व आसपास की घरों की छत पर अचानक कहां से आ गए? हम सभी जानते है की जहांगीरपुरी में रोहिंग्या एवं बांग्लादेशी घुसपैठियों की अवैध बसावट से तेजी से भौगोलिक व जनसांख्यिकीय परिदृश्य बदला है। इससे कई इलाके में धार्मिक कट्टरता बढ़ रही है। सरकारी जमीनों, पार्कों, सड़कों पर कब्ज़ा कर अवैध बस्तियां बस रही है। अवैध मदरसों के संचालन हो रहे है। कई अवैध धंधे चल रहे हैं, जिससे काला धन बढ़ रहा है।

यह सिर्फ जहांगीरपुरी तक ही सिमित नहीं है बल्कि इस तरह के कई क्षेत्र दिल्ली एवं देश में बन चुके है। कट्टरपंथी मुस्लिम संगठन पीएफआई ऐसे ही भौगोलिक व जनसांख्यिकीय परिस्थितियों का उपयोग कर देश की शांति एवं सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर रहा है। इस घटना के बाद कुछ तथा कथित लोगों द्वारा कहा गया की मुस्लिम बहुल इलाके से हिन्दू शोभायात्रा को नहीं निकाला जाना चाहिए। यानी दूसरे शब्दों में कहें तो हिन्दुओं एवं शोभायात्रा पर हुए हमले के लिए हिन्दू ही दोषी है क्योंकि उन्होंने मुस्लिम बहुल क्षेत्र एवं मस्जिद के सामने से शोभायात्रा निकाली। यह बहुत ही खतरनाक सोच है। अब क्या कस्बों को मुस्लिम बहुल–हिन्दू बहुल टापुओं में बाटा जाएगा? अगर हिन्दू शोभायात्रा देश के कुछ क्षेत्र जो मुस्लिम बहुल है वहां से नहीं निकल सकती तब तो उस कुतर्क से देश के अधिकतर क्षेत्र हिन्दू बहुल है और वहां से मुस्लिम जुलुस नहीं निकलने चाहिए? यह देश एवं समाज के लिए खतरनाक सोच है। ऐसी हिंसक घटनाओं से दरअसल मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में रह रहे गरीब हिन्दुओं के अन्दर असुरक्षा की भावना पैदा कर उन्हें अपना घर बार औने–पौने दाम में बेचकर पलायन करने के लिए मजबूर करने की एक गहरी साजिश है।

हिन्दुओं को यह सोचना होगा की अपना देश भारत जहाँ की 80 प्रतिशत जनसंख्या हिन्दू है उस भारत में क्या हिन्दू शांति से पर्व–त्योहार नहीं मना सकता? रामनवमी–हनुमान जयंती शोभायात्रा नहीं निकाल सकता? यह गंभीर विषय है और इस पर गंभीर चिंतन होना चाहिए। अभी यह डर काल्पनिक लग सकता है लेकिन अगर हिन्दुओं में एकता की कमी बनी रही और आपस में ही टकराव होता रहा तो इसे वास्तविकता में बदलते समय नहीं लगेगा।

पृथ्वीराज चौहान के किला राय पिथौरा के बदायूं दरवाजे को ढूंढेगा एएसआइ

दिल्ली में आपने लाहौरी गेट और लखनऊ रोड तो सुना होगा, लेकिन अब बदायूं दरवाजे के बारे में भी जान लीजिए। करीब साढ़े 11 सौ साल पहले यह दरवाजा बनाया गया था, जो पृथ्वीराज चौहान के किला राय पिथौरा के पूर्वी छोर के तीन दरवाजों में से एक है। हालांकि, अभी यह उस स्थान पर दिखाई नहीं दे रहा है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआइ) अब इस दरवाजे की तलाश में खोदाई कराने की योजना बना रहा है। एएसआइ की मानें तो दरवाजा गायब नहीं है, बल्कि साकेत के पास जंगल में जमीन के अंदर दबा है, जिसे बाहर निकालने के लिए खोदाई होगी। इसके लिए एएसआइ के दिल्ली मंडल ने अनुमति ली है। वहीं, बताया जाता है कि बदायूं दरवाजे अलाउद्दीन खिलजी ने शराब से भरे सारे बर्तन तोड़ दिए थे और शराब न पीने की कसम खाई थी।

लाडो सराय, हौजरानी, साकेत, प्रेस एन्क्लेव तथा मित्तल फार्म और महरौली–बदरपुर रोड के आसपास किला राय पिथौरा की चारदीवारी है। इसके बीच कभी हौजरानी दरवाजा, बदायूं दरवाजा और बरका दरवाजा था। किला राय पिथौरा चारदीवारी के साक्ष्य वर्तमान में हैं, लेकिन बदायूं दरवाजा कहीं दिखाई नहीं दे रहा है। साकेत मेट्रो स्टेशन के गेट नंबर तीन की तरफ जंगल में इस दरवाजे के होने की संभावना जताई जा रही है। इसके एक तरफ कुतुब गोल्फ कोर्स है, तो दूसरी ओर सीआइएसएफ का परिसर है। पुरात्वविद् बताते हैं कि उस समय इस दरवाजे का प्रयोग बदायूं आवागमन के लिए किया जाता था। इसलिए इस दरवाजे का नाम बदायूं दरवाजा पड़ा।

अनंगपाल ने बनवाया था यह दरवाजा

एएसआइ के पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक डा. बीआर मणि के अनुसार बदायूं दरवाजा राजा अनंगपाल तोमर ने बनवाया था। इसके बाद पृथ्वीराज चौहान के किला राय पिथौरा का यह एक महत्वपूर्ण दरवाजा बन गया था। उनके शासन के पतन के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक और इल्तुतमिश ने इस किले में अपने हिसाब से निर्माण कराया और इस दरवाजे का प्रमुख रूप से उपयोग किया। वहीं, एक अन्य पुरातत्वविद कहते हैं कि जिस समय कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली पर राज कर रहा था, उस समय इल्तुतमिश बदायूं का गवर्नर था। ऐबक की मृत्यु के बाद इल्तुतमिश ने दिल्ली पर राज किया। उस समय उसने भी इस दरवाजे का प्रमुख रूप से उपयोग किया। दिल्ली की स्थापना 736 ई. में राजा अनंगपाल तोमर ने की थी। राजा अनंगपाल तोमर द्वितीय ने वर्ष 1052 में यहां एक किला लाल कोट बनवाया, जिसे दिल्ली का पहला शहर भी कहा जाता है। इस लाल कोट में 13 दरवाजे बनाए गए थे, जिनमें से सबसे प्रमुख और सबसे बड़ा बदायूं दरवाजा था।

पृथ्वीराज के किला राय पिथौरा का यह मुख्य दरवाजा था

अनंगपाल के बाद दिल्ली पर अजमेर के चौहान वंश के शासक पृथ्वीराज चौहान ने 1175 से 1192 ई. तक दिल्ली पर राज किया। पृथ्वीराज चौहान के किले का नाम राय पिथौरा था, उन्होंने लाल कोट में कई निर्माण कराकर इसे बड़ा और मजबूत बनाया। उसके बाद इस किले का नाम किला राय पिथौरा पड़ा। उस समय भी बदायूं दरवाजा किला राय पिथौरा का मुख्य दरवाजा बना रहा। बदायूं दरवाजे का पृथ्वीराज चौहान के बाद के शासकों ने भी पूरा उपयोग किया। अलाउद्दीन खिलजी के शासन में इस दरवाजे के पास ही दोषियों को सजा भी दी जाती थी। उन्हें यहां प्रताड़ित किया जाता था और लोगों के सामने ही उनका सिर कलम कर दिया जाता था। दिल्ली सल्तनत में बदायूं दरवाजा काफी व्यस्त दरवाजा था, जहां से कारोबार, प्रशासनिक कार्यो और जंग के लिए कारोबारियों, सूबेदारों और फौज का आना–जाना होता रहता था। एएसआइ के लिए 19वीं शताब्दी में जनरल एलेक्जेंडर कनिंघम ने बदायूं दरवाजे समेत दस दरवाजों के अवशेष ढूंढे थे।

अनंगताल को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करने की योजना

अनंगताल को राष्ट्रीय स्मारक घोषित कराने की तैयारी अब शुरू हुई है। इस ताल को दिल्ली को बसाने वाले और नाम देने वाले हिन्दू राजा अनंगपाल तोमर ने बनवाया था। ताल दक्षिणी दिल्ली में स्थित संजय वन में मौजूद है। मगर उपेक्षा के चलते यह बदहाल हो चुका है। यह बड़ी विडंबना है कि यह स्मारक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआइ) की राष्ट्रीय स्मारकों की सूची में भी शामिल नहीं है। अब इसे राष्ट्रीय स्मारक घोषित कराने के लिए राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण ने पहल शुरू की है। अनंगताल, तोमर राजा अनंगपाल ने बनवाया था। उनके किला लालकोट की दीवारें दक्षिणी दिल्ली में कुछ स्थानों पर मिलती हैं। इसके कई जगह प्रमाण मिले हैं कि अनंगपाल ने ही इस शहर को 1052 ईसवी में बसाया था और ढिल्लिका नाम दिया था, जो धीरे धीरे दिल्ली बन गया। उज्जैन में खोदाई के दौरान मिला एक शिलापट् भी इस बात को प्रमाणित करता है। लालकोट अनंगपाल के किले का नाम था जो 1067 ईसवीं तक बनाया जाता रहा। अनंगपाल की मृत्यु 1081 ईसवी में हुई।

उन्होंने 29 वर्ष, छह माह और 18 दिन दिल्ली पर राज किया। एएसआई ने अनंगपाल से संबंधित प्रमाण जुटाने के लिए 1991–1994 तक संजय वन में खोदाई की थी। उस समय इन राजा से संबंधित किला के पैलेस क्षेत्र और ताल के प्रमाण मिले थे। उस समय ताल को साफ कराया गया था, पैलेस क्षेत्र में मिट्टी हटाई गई थी। एएएसआई इस निष्कर्ष पर भी पहुंच गया था कि यही अनंगपाल के किले का पैलेस क्षेत्र है और तालाब है।

हैरानी इस बात की है कि किसी हिन्दू राजा से संबंधित इतनी समृद्ध संपदा मिलने के बाद भी एएसआई चुप होकर बैठ गया। तीस साल बाद अब इसकी बदहाली दूर करने की पहल शुरू हुई है। इसकी पहल करने वाले राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण के चेयरमैन तरुण विजय कहते हैं कि यह ऐसा प्रमाण है जिसके बारे में अब किन्तु परन्तु की कोई गुंजाइश नही है। एएसआई पैलेस क्षेत्र में खोदाई करा चुका है और वहां सब कुछ स्पष्ट हो चुका है। अनंगताल की बदहाली दूर होनी चाहिए। यह राष्ट्रीय स्मारक घोषित होगा चाहिए।

राजा अनंगपाल के किला के पैलेस क्षेत्र और ताल की खोदाई करा इसे प्रमाणित करने वाले एएसआई के पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक डा बी आर मणि कहते हैं कि इस ताल और पैलेस की खोदाई कराने के बाद उनका दिल्ली से बाहर तबादला हो गया था। उनके बाद यह महत्वपूर्ण क्षेत्र बदहाल होता चला गया। उस समय भी पैलेस व ताल वाला क्षेत्र डीडीए के अधीन था। जिसे आसानी से हासिल किया जा सकता था। उन्होंने बताया कि पैलेस वाले क्षेत्र के साथ ही 150 मीटर चौड़ाई और 300 मीटर के करीब लंबाई में राजा अनंगपाल से पहले के सालों से संबंधित प्रमाण भी मिले हैं।

अनंगताल को व्यवस्थित करने की कोशिश की जा रही है। मगर अब इसे लेकर कई तकनीकी पहलू सामने आ रहे हैं। पहला तो यह है कि ताल के अंदर और आसपास घना जंगल हो गया है। वन विभाग इसे रिज एरिया घोषित कर चुका है। यह पूरी जमीन डीडीए के पास है। राजस्व विभाग से ताल के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है। ताल की माप की जानी है जिसके बाद आगे की प्रक्रिया शुरू हो। मगर वहां पहुंचना भी कठिन हो रहा है फिर भी इसके बारे में प्रयास जारी हैं।

दिल्ली के प्राचीन मंदिर

500 वर्ष पुराना है नजफगढ़ का ठाकुरद्वारा मंदिर

दिल्ली के बाहरी इलाके नजफगढ़ में भगवान श्रीकृष्ण एवं राधा रानी का अति प्राचीन मंदिर स्थापित है। नजफगढ़ के लोग इसे ठाकुरद्वारा मंदिर के नाम से पुकारते है। इस मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण एवं राधारानी की अति प्राचीन मूर्ति स्थापित है। इस मंदिर में भगवान हनुमान जी की महाभारतकालिन सिद्ध प्रतिमा भी स्थापित हैं। हनुमान जी की यह प्रतिमा दिल्ली के यमुना बाजार स्थित प्राचीन हनुमान मंदिर की प्रतिमा का ही दूसरा प्रतिरूप है। गांव वाले बताते हैं कि यमुना बाजार के प्राचीन हनुमान मंदिर की स्थापना के समय ही इस मंदिर में भी उसी समय हनुमान जी का वही रूप स्थापित किया गया था।

इस प्राचीन मंदिर में श्रीकृष्ण एवं राधारानी की मनमोहिनी स्वरूप स्थापित है जिसके दर्शन मात्र से ही लोगों की मनोकामना पूर्ण हो जाती है। स्थानीय गांव वाले बताते हैं कि वृंदावन में स्थापित श्री बिहारी जी की प्रतिमा की छवि ही इस मंदिर में स्थापित की गई है। वृंदावन में श्री बिहारी जी के मंदिर की स्थापना के समय की इस मंदिर में श्रीकृष्ण भगवान एवं राधारानी जी की प्रतिमा स्थापित की गई थी। नजफगढ़ के निवासी बताते हैं कि इस मंदिर का संचालन मंदिर पंचायत समिति द्वारा किया जाता है। जन्माष्टमी एवं हनुमान जंयती के अवसर पर मंदिर की सजावट देखते ही बनती है जिसे देखने दूर–दूर से लोग नजफगढ़ आते है। नजफगढ़ ही नहीं बल्कि आसपास के तमाम गांवों के निवासी कोई भी शुभ कार्य होने पर इस मंदिर के दर्शन के लिए अवश्य आते है। इस मंदिर की इतनी महत्ता हैं कि आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से लोग पैदल मंदिर के दर्शन करने के लिए आते है जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएं होती है।

नजफगढ़ के इस प्राचीन ठाकुरद्वारा मंदिर की व्यवस्थाओं को स्थानीय मंदिर समिति द्वारा संभाला जाता है। मंदिर समिति भक्तों की सुविधाएं, दर्शन एवं पूजा पाठ की व्यवस्था को देखती है एवं मंदिर के कर्मचारियों की व्यवस्था को संभालती है। नजफगढ़ के स्थानीय निवासियों की सहायता से मंदिर का संचालन बेहतरीन तरीके से किया जा रहा है। खास बात यह हैं कि मंदिर के संचालन करने वाली समिति किसी से दान इत्यादि नहीं मांगती बल्कि भगवान श्रीकृष्ण की कृपा से मंदिर को बराबर आर्थिक मदद मिलती रहती है। मंदिर में श्रीमदभागवत कथा एवं सुंदर कांड के पाठ का आयोजन भी समय–समय पर किया जाता है। इस मंदिर में दिल्ली ही नहीं बल्कि हरियाणा तक से लोग दर्शन करने आते है। नजफगढ़ के निवासी बताते हैं कि इस मंदिर में श्रीकृष्ण जी के समक्ष मांगी गई मनोकामना अवश्य पूर्ण होती है इसलिए इस मंदिर के प्रति लोगों मे जबरदस्त आस्था है। नजफगढ़ के गांव वालों की इस मंदिर के प्रति प्रबल आस्था एवं विश्वास है। नजफगढ़ के बुजुर्ग बताते हैं कि उनके पूर्वजों ने उन्हें इस प्राचीन मंदिर की विशेषताओं के बारे में बताया है। मंदिर के प्रति बताई गई सभी बातें पूर्ण सत्य एवं प्रमाणिक है। मंदिर में भक्तों के लिए बेहद सुगम व्यवस्था को लागू किया गया है ताकि किसी भक्त को दर्शन में किसी असुविधा का सामना न करना पड़े। अगर आप वृंदावन में श्रीबिहारी जी के दर्शन के लिए नहीं जा पा रहे है तो आप एक बार दिल्ली के नजफगढ़ ठाकुरद्वारा मंदिर में दर्शन जरूर करें। बिहारी जी आपकी सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करेंगे।

आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन
हेल्थ सेक्टर में
डिजिटल इकोसिस्टम
ऐसे बनेगा हेल्थ कार्ड

अक्सर जब हम इलाज कराने जाते हैं, तो बीमारी की हिस्ट्री भूल जाते हैं या कहें कि बीमारी से जुड़े भारी–भरकम पुरानी जांच रिपोर्ट एक जगह से दूसरे जगह ले जाने में छूट जाते हैं या फिर खो जाते हैं। डिजिटल हेल्थ कार्ड होने से इस तरह की जुड़ी तमाम समस्याएं खत्म हो जाएंगी। इस कार्ड से मरीज और डॉक्टर दोनों को फायदा होगा। क्या है डिजिटल हेल्थ कार्ड और कौन बनवा सकता है साथ ही इससे जुड़ी तमाम महत्वपूर्ण जानकारी बारे में जानते हैं।

डिजिटल स्वास्थ्य रिकॉर्ड में रहेगी हेल्थ की जानकारी

आयुष्मान भारत डिजिटल हेल्थ कार्ड आधार कार्ड की तरह है। जिस तरह आधार कार्ड किसी भी तरह के वेरिफिकेशन के लिए एक डॉक्यूमेंट की तरह काम करता है, उसी तरह आयुष्माडन भारत हेल्थर कार्ड में भी नागरिक की पूरी मेडिकल हिस्ट्री मौजूद रहेगी। आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के तहत, नागरिक अपना आभा (आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता) नंबर बना सकेंगे, जिससे उनके डिजिटल स्वास्थ्य रिकॉर्ड को जोड़ा जा सकेगा। यह विभिन्न स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं में व्यक्तियों के लिए विस्तृत स्वास्थ्य रिकॉर्ड बनाने में सक्षम होगा और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं द्वारा नैदानिक निर्णय लेने को बेहतर बनाएगा।

पीएम मोदी ने 2020 में की थी शुरुआत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त 2020 को लाल किले की प्राचीर से देश के लिये नेशनल हेल्थ डिजिटल मिशन लाने का ऐलान किया था। पायलट प्रोजेक्ट की सफलता के बाद केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने सरकार के प्रमुख कार्यक्रम आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन को देश में लागू करने की मंजूरी दे दी है। इस मिशन के अंतर्गत नागरिकों को आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता खोलने में मदद मिलेगी।

5 साल के लिए 1,600 करोड़ रुपये की मंजूरी

हाल ही में पीएम मोदी की अध्यक्षता में कैबिनेट ने 1,600 करोड़ रुपये के साथ 5 साल के लिए आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के राष्ट्रव्यापी कार्यान्वयन को मंजूरी दी। आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) के तहत, नागरिक अपना आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता संख्या बना सकेंगे। राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (एनएचए), आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) की कार्यान्वयन एजेंसी है।

टेलीमेडिसिन जैसी सेवा में होगा फायदा

डिजिटल हेल्थ कार्ड में 14 अंकों का नंबर दिया जाएगा। जिसमें उनके हेल्थ का पूरा रिकॉर्ड होगा। खास बात यह है कि आज के समय में टेलीमेडिसिन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके आने से टेलीकंसल्टेशन के दौरान केवल बताना होगा कि क्या परेशानी है, बाकी डॉक्टर उस आईडी से अपने सिस्टम पर देख सकेंगे। डॉक्टर के पास मरीज के बारे में क्लिनिकल स्टडी करने का मौका भी रहेगा। ये डॉक्टर और मरीज दोनों के लिये बहुत उपयोगी होगा। मिशन टेलीमेडिसिन जैसी तकनीकों के उपयोग को प्रोत्साहित करके और स्वास्थ्य सेवाओं के राष्ट्रीय स्तर पर विकल्प चयन (पोर्टेबिलिटी) को सक्षम करके गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल तक न्यायसंगत पहुंच में सुधार करेगा।

आयुष्मान भारत
प्रधान मंत्री जन स्वास्थ्य योजना

कैसी बनेगी हेल्थ आईडी

आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट बनाना अब आसान हो चुका है। आप खुद भी हेल्थ आईडी बना सकते हैं। आरोग्य सेतु एप का उपयोग करके आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता बनाया जा सकता है। इसके अलावा आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना की नोडल एजेंसी राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण ने दोनों के इंटीग्रेशन का ऐलान किया है। लगभग 21.4 करोड़ लोग आरोग्य सेतु एप का प्रयोग कर रहे हैं, जो अपना आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट नंबर जनरेट कर सकेंगे। यह नंबर 14 अंको का बनेगा। उपयोगकर्ता अपने पुराने और नए मेडिकल रिकॉर्ड को इस नंबर से लिंक कर सकते हैं। यह सभी रिकॉर्ड रजिस्टर्ड हेल्थ प्रोफेशनल एवं हेल्थ सर्विस प्रोवाइडर के साथ शेयर किए जाएंगे। डिजिटल हेल्थ कार्ड बनाने के लिए रजिस्ट्रेशन के दौरान यूजर अपने आधार नंबर के जरिए प्रमाणित कर सकता है। इससे नाम, जन्मतिथि, लिंग व पता जैसी जानकारी अपने आप एड हो जाएगी। आधार के अलावा ड्राइविंग लाइसेंस या मोबाइल नंबर के जरिए भी बनवा सकते हैं।

हेल्थ सेक्टर में डिजिटल इकोसिस्टम जरूरी

स्वास्थ्य इकोसिस्टम में डिजिटल स्वास्थ्य समाधान पिछले कुछ वर्षों में काफी लाभकारी सिद्ध हुए हैं। को–विन, आरोग्य सेतु और ई–संजीवनी ने यह दिखाया है कि स्वास्थ्य सेवा तक लोगों की पहुंच को सक्षम करने में प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। हालांकि, देखभाल की निरंतरता और संसाधनों के प्रभावी उपयोग के लिए ऐसे समाधानों को एकीकृत करने की आवश्यकता है।

जन–धन, आधार और मोबाइल (जेएएम) ट्रिनिटी तथा सरकार की अन्य डिजिटल पहलों पर आधारित, आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) विस्तृत डेटा के प्रावधान, सूचना और अवसंरचना सेवाओं के माध्यम से एक आसान ऑनलाइन प्लेटफार्म का निर्माण कर रहा है एवं खुले, परस्पर संचालन–योग्य व मानक–आधारित डिजिटल प्रणाली का विधिवत लाभ उठाते हुए स्वास्थ्य संबंधी व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा, गोपनीयता और निजता भी सुनिश्चित कर रहा है।

देश में 17 करोड़ से ज्यादा बनाए गए कार्ड

आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) के पायलट प्रोजेक्ट के तहत 6 केंद्र शासित प्रदेशों लद्दाख, चंडीगढ़, दादरा और नगर हवेली, दमन और दीव, पुडुचेरी, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह तथा लक्षद्वीप में एनएचए द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी प्लेटफार्म के सफलता के साथ पूरी की गयी है। 24 फरवरी 2022 तक, 17,33,69,087 आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाते बनाए गए हैं और एबीडीएम में 10,114 डॉक्टरों और 17,319 स्वास्थ्य सुविधाओं को पंजीकृत किया गया है। एबीडीएम प्रभावी सार्वजनिक स्वास्थ्य उपायों के संबंध में न केवल साक्ष्य आधारित निर्णय लेने की सुविधा प्रदान करेगा, बल्कि यह नवाचार को बढ़ावा देगा और स्वास्थ्य सेवा इकोसिस्टम में रोजगार के अवसर भी पैदा करेगा।

मरीज की अनुमति से ही देख सकेंगे हेल्थ कार्ड

आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के तहत बनने वाले हेल्थ कार्ड के डेटा को सुरक्षित रखने का भी प्रावधान रखा गया है। हेल्थ कार्ड को बिना मरीज की अनुमति के एक्सेस नहीं किया जा सकेगा, क्योंकि जिस भी डॉक्टर के पास जाएंगे आपको पूरी मेडिकल हिस्ट्री बताने के लिए अपनी यह आईडी बतानी होगी। लेकिन हेल्थ केयर सेंटर या डॉक्टर को जानकारी एक्सेस करने के लिए ओटीपी की जरूरत होगी। आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट कार्ड को डाउनलोड भी किया जा सकता है। कार्ड में एक क्यू –आर कोड होता है, जिसे स्कैन करके ओटीपी वेरीफिकेशन के बाद रिकॉर्ड देखा जा सकता है। इसमें डेमोग्राफिक, लोकेशन, फैमिली, रिलेशनशिप और संपर्क समेत कई जानकारियां एकत्र होंगी

लिखने का शौक है तो बने वेब राइटर

वेब राइटर बनने के लिए कोई विशेष कोर्स की आवश्यकता नहीं है। हालांकि, वेब राइटिंग की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए कुछ संस्थानों ने इसके लिए शार्टटर्म ऑनलाइन कोर्स शुरू किए हैं। अच्छी राइटिंग स्किल्स शब्दावली और व्याकरण के साथ कोई भी स्नातक डिग्री धारक क्षेत्र में कैरियर बना सकता है। लेकिन जिन्होंने अंग्रेजी या मास कम्युनिकेशन में ग्रेजुएशन किया है उनकी डिमांड मार्केट में बहुत ज्यादा है। इसके अलावा कंप्यूटर की जानकारी के साथ–साथ ऑनलाइन मार्केटिंग और एससीयू की अच्छी समझ होनी चाहिए।

अगर आपको भी लिखने का शौक है और आप आकर्षक लेख लिख सकते हैं तो आपके लिए वेब राइटिंग के क्षेत्र में कैरियर एक अच्छा ऑप्शन है। इस प्रतिस्पर्धी युग में ज्यादातर कंपनियों की अपनी वेबसाइट होती हैं। इन वेबसाइट के लिए कंटेंट लिखने वाले पेशेवरों की आवश्यकता होती है। ऐसे में अवसरों की कोई कमी नहीं है। वेब राइटर का मतलब ऑनलाइन मीडिया या वेबसाइट के लिए कंटेंट लिखना होता है।

आकर्षक अर्थपूर्ण और अनोखा लेख लिखने के लिए कंपनी को वेब राइटर की जरूरत होती है। अच्छा कंटेंट अधिक लोगों को आकर्षित करता है और कंपनियों के बिजनेस में बढ़ोतरी करता है। अच्छा कंटेंट आजकल हर वेबसाइट की जरूरत बन गया है क्योंकि कंटेंट के जरिए ही हम अपनी वेबसाइट को विभिन्न सर्च

इंजन जैसे याहू, गूगल आदि पर टॉप रैंकिंग दिला सकते हैं। जिससे कि ज्यादा से ज्यादा उपभोग कर्ता हमारी वेबसाइट को विजिट करें।

शिक्षक योग्यता

वेब राइटर बनने के लिए कोई विशेष कोर्स की आवश्यकता नहीं है। हालांकि, वेब राइटिंग की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए कुछ संस्थानों ने इसके लिए शार्टटर्म ऑनलाइन कोर्स शुरू किए हैं। अच्छी राइटिंग स्किल्स शब्दावली और व्याकरण के साथ कोई भी स्नातक डिग्री धारक क्षेत्र में कैरियर बना सकता है। लेकिन जिन्होंने अंग्रेजी या मास कम्युनिकेशन में ग्रेजुएशन किया है उनकी डिमांड मार्केट में बहुत ज्यादा है। इसके अलावा कंप्यूटर की जानकारी के साथ–साथ ऑनलाइन मार्केटिंग और एससीयू की अच्छी समझ होनी चाहिए।

कैसे बने सफल वेब राइटर

एक सफल वेब राइटर को अपना कंटेंट सर्च इंजन के अनुसार बनाना होता है जिससे सर्च इंजन हमारी वेबसाइट को आसानी से पढ़ सके और वेबसाइट पर ज्यादा से ज्यादा ट्रैफिक आ सके। वेब राइठर को कंटेंट लिखते हुए कुछ नियमों का पालन भी करना होता है। जैसे हम जो भी कंटेंट बनाते हैं वह यूनिक होना चाहिए, यानी खुद का बनाया होना चाहिए। किसी भी प्रकार के कॉपी कंटेंट से बचना चाहिए। इसके अलावा अगर कंटेन में कोई इमेज डालते हैं तो वह खुद की बनाई होनी चाहिए। कॉपी की हुई इमेज न डालें तो बेहतर है। वेब राइटर को एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि अगर हम सर्च इंजन के दिशा निर्देशों के विपरीत काम करते हैं तो सर्च इंजन या तो हमारी वेबसाइट पर प्रतिबंध लगा सकता है या फिर उसकी रैंकिंग को कम कर सकता है।

कैरियर विकल्प के रूप में वेब राइटिंग का एक विशाल दायरा है साथ ही आप किसी भी भाषा में वेब राइटर बन सकते हैं उदाहरण के लिए यदि आप हिंदी में अच्छे हैं तो आप हिंदी में वेब राइटर बन सकते हैं यदि आप एक से अधिक भाषा जानते हैं तो आप का अनुवाद भी कर सकते हैं।

– साभार पत्रिका

बार–बार लगती है प्यास और सूखता है गला तो हो जाएँ सावधान!

गर्मियों के मौसम में प्यास लगना या गला सूखना कोई असामान्य बात नहीं है। इस मौसम में शरीर में पानी की कमी हो जाती है जिससे बचने के लिए हमें भरपूर मात्रा में तरल पदार्थों का सेवन करना चाहिए। लेकिन अगर इसके अलावा भी बार बार आपका गला सूखता है या प्यास लगती है तो सावधान हो जाइए। यह स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का संकेत हो सकता है। आज के इस लेख में हम आपको बताएंगे कि बार–बार प्यास लगना किन हेल्थ प्रॉब्लम्स की तरफ इशारा करते हैं दृ

डायबिटीज

जब शरीर में कोशिकाएँ इंसुलिन रेसिस्टेंट हो जाती हैं तो किडनी को ब्लड से शुगर की अधिक मात्रा बाहर निकालने के लिए ज़्यादा मेहनत करनी पड़ती है। इससे आपको बार–बार वॉशरूम जाना पड़ता है और इसके परिणामस्वरूप आपको प्यास ज्यादा लगती है। बार–बार प्यास पेशाब आना और अत्यधिक प्यास लगना डायबिटीज के प्रमुख लक्षणों में से एक है।

एनीमिया

जब शरीर में आयरन की कमी होती है तो शरीर में खून बनना कम हो जाता है। एनीमिया एक ऐसी स्थिति है जिसमें शरीर में हीमोग्लोबिन बनाने के लिए पर्याप्त रेड ब्लड सेल्स नहीं होती हैं। भारत में लगभग 60 प्रतिशत लोग एनीमिया की बीमारी से ग्रस्त हैं। खासतौर पर महिलाओं में यह दिक्कत ज़्यादा देखने को मिलती है। जिन महिलाओं को पीरियड्स के दौरान हैवी ब्लीडिंग होती है, उनमें अक्सर एनीमिया की शिकायत देखने को मिलती है। डिहाइड्रेशन भी एनीमिया का एक प्रमुख लक्षण है। इसके अन्य लक्षणों में चक्कर आना, थकान, पसीना और अन्य शामिल हैं।

ड्राई माउथ

जब लार ग्रंथियां पर्याप्त मात्रा में लार यानी सलाइवा नहीं बना पाती हैं तो इससे बार–बार प्यास लग सकती है और मुँह सूखने लगता है। यह समस्या कुछ दवाइयों के सेवन, कैंसर के इलाज या तंबाकू के सेवन के कारण हो सकती है। ड्राई माउथ के अन्य लक्षणों में थकान, सासं में दुर्गंध, स्वाद में बदलाव, मसूड़ों में जलन और चबाने में परेशानी शामिल है।

हाइपरकैल्सीमिया

हाइपरकैल्सीमिया एक ऐसी स्थिति है जिसमें शरीर में कैल्शियम का स्तर बहुत ज़्यादा बढ़ जाता है। कैल्शियम का खतरनाक स्तर तक बढ़ जाना ही हाइपरकैल्सीमिया कहलाता है। बार–बार प्यास लगना हाइपरकैल्सीकमिया का प्रमुख लक्षण हो सकता है। ब्लड में कैल्शियम की अधिक मात्रा हड्डियों को कमजोर बना सकती है और किडनी स्टोन की संभावना भी बढ़ सकती है।

प्रेगनेंसी

प्रेगनेंसी के शुरुआती दिनों में उल्टी–मतली, दर्द, कमजोरी जैसे कई लक्षण शामिल हैं। इसमें मुँह सूखना और बार–बार प्यास लगना भी शामिल है। दरअसल, प्रेगनेंसी की पहली तिमाही में पूरे शरीर में रक्त प्रवाह का स्तर काफी तेज हो जाता है। यह किडनी को अतिरिक्त तरल पदार्थ बनाने के लिए मजबूर करती है और इसी वजह से आपको बार–बार पेशाब जाना पड़ता है। ऐसे में आपको बार–बार प्यास लगती है, जो कि शरीर में पानी की कमी का संकेत है।

डिस्क्लेमर : इस लेख के सुझाव सामान्य जानकारी के लिए हैं। इन सुझावों और जानकारी को किसी डॉक्टर या मेडिकल प्रोफेशनल की सलाह के तौर पर न लें। किसी भी बीमारी के लक्षणों की स्थिति में डॉक्टर की सलाह जरूर लें।

– साभार प्रभा साक्षी

भारत की आज़ादी के संघर्ष का बीज 1857 में बोया गया : भैयाजी जोशी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सरकार्यवाह सुरेश भैयाजी जोशी का कहना है की आज़ादी के संघर्ष का बीज 1857 में बोया गया और कश्मीर से कन्याकुमारी तक सभी साधारण जनमानस ने एक सैनिक की भाँती इस संघर्ष में भाग लिया जो विश्व में अनूठा उदाहरण है। इस संघर्ष को महान क्रांतिकारियों ने अपने बलिदान से सींचा और 90 वर्षो बाद 1947 में जाकर देश को आज़ादी मिली। भारत हमेशा से अपने चिंतन, व्यवहार, सभ्यता में अग्रणी रहा है और इस विचार ने ही अब तक भारत को कितने ही आक्रान्ताओं और षड्यंत्रों से सुरक्षित रखा है। आज स्वतंत्रता के इस अमृतवर्ष में हम सबको अपने युवा शक्ति के बल पर देश को आगे ले जाना है और आने वाली चुनौतियों से संघर्ष करने के लिए युवाओं को दिशा देनी है। हमारा इतिहास महातपस्वियो और शोधकर्ताओं का रहा है और संस्कारो के माध्यम से ही आने वाले समय में हम देश के लिए मरने वाले नहीं बल्कि देश के लिए जीने वाले बनेंगे और एक जिवंत भारत को भविष्य की पीढ़ी ले लिए तैयार करेंगे।

भैयाजी जोशी देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान हुए क्रांतिकारियों के बलिदान को याद करते हुए आज़ादी के अमृतमहोत्सव पर भारत विकास परिषद के तत्वाधान में न्यायमूर्ति एस. एन. अग्रवाल जी द्वारा लिखी गयी पुस्तक भारत की आज़ादी में क्रांतिकारियों की शहादत पुस्तक के लोकार्पण कार्यक्रम में बोल रहे थे।

दिमाग का कसरत

1. काला रंग है मेरा सिर के ऊपर रहता हूं धूप से सबको बचाऊं बोलो क्या कहलाता हूं।
2. पानी के भीतर उछल कूद मचाऊं पर बंदर ना कहलाऊं
3. गर्मी में जो सांस फूला दें, सर्दी में सबको पनाह दे।
4. बड़े मजे से मुझे पीसते, सब मिलकर मुझे काटते मगर कोई खाता नहीं।
5. ऊपर से हरा हूं अंदर से पीला हूं काले बीजों से भरा हूं।
6. बिना महल के रहता हूं फिर भी राजा कहलाता है।
7. हम दोनों है सगे भाई एक बिना न संगत भायी।
8. लाल लाल माई के दो बच्चे एक सफेद एक काला दोनों उड़े आकाश।
9. हर जेब में रहता हूं कभी नहीं सोता हूं रात दिन बजता हूं।
10. नींद नहीं हूं पर रोज शाम को आती हूं सूरज को देख भाग जाती हूं।
11. सबके साथ ही चलती हूं कभी आगे कभी पीछे दिखती हूं।
12. गोली है मेरा भोजन दुश्मन को लगे मुझसे डर।
13. पानी से निकलता हूं बिना पत्तों का बड़ा सा पेड़।
14. सबकी मैं जरूरत हूं मेरा बिना ना कोई चले मेरे बिना ना कोई हिले।
15. मेरी नाक ही मेरा हाथ आदमी के भी रहता हूं साथ।

छाता, मेढ़क, धूप, ताश, पपीता, शेर, तबला, धुंआ, मोबाइल फोन, रात, परछाई, बंदूक, पानी का फुव्वारा, पानी, हाथी

आदिगुरू शंकराचार्य जयंती

वैशाख शुक्ल पक्ष पंचमी (6 मई 2022)

शंकराचार्य को आदि शंकराचार्य या श्री आदि शंकराचार्य या भगवतपाद आचार्य के नाम से भी जाना जाता है। वे एक सुप्रसिद्ध भारतीय दार्शनिक एवं धर्म शास्त्री थे। उनके धर्मशास्त्र पर अद्वैत वेदांत के सिद्धांत की अभूतपूर्व शिक्षाओं ने हिंदू धर्म के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। शंकराचार्य की जन्म जयंती वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाई जाती है जो कि अंग्रेजी कलेंडर के अप्रैल से मई के बीच माह में पड़ती है। इस वर्ष आदिगुरू शंकराचार्य जयंती 6 मई 2022 को मनाई जाएगी।उनकी शिक्षाओं और दर्शन ने हिन्दू धर्म अत्यंत प्रभावित किया। शंकराचार्य ने हिंदू धर्म के पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आदि शंकराचार्य का जन्म कलि युगाब्द 2631 संवत यानि 508 ईसा पूर्व तत्कालीन चेर साम्राज्य, के कालड़ी गाँव (वर्तमान में केरल) में एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता शिवगुरु थे और मां आर्यम्बा थीं। उनके माता–पिता लंबे समय तक निःसंतान थे और उन्होंने भगवान शिव से बहुत प्रार्थना की थी कि वे उन्हें संतान का आशीर्वाद दें। जल्द ही वे शंकराचार्य के रूप में उन्हे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई और वे संतान सुखी दंपति बन गए। भगवान शंकर की कृपया दृष्टि से उनका जन्म होने के कारण उनके माता पिता ने उनका नाम शंकर रखा। बालक शंकर अपने मुंह से सबसे पहले जिस शब्द का उच्चारण किया, वह शब्द था। शंकर अपने बाल्यकाल से ही एक कुशाग्र बुद्धि के बालक थे। तीन वर्ष की आयु में उनका चूड़ाकर्म संस्कार होने के बाद कुछ ही महीनों में उन्होंने संस्कृत व्याकरण, रामायण, महाभारत, भागवत गीता इत्यादि को सीख लिया। इसी बीच मात्र चार वर्ष की अवस्था में उनके पिता की मृत्यु हो गई।ज्ञान के प्रति जिज्ञासा ने उन्हें दार्शनिक और धर्मशास्त्री बना दिया। आठ वर्ष की आयु में उन्हें चारों वेद कंठस्थ हो गए थे और बारह वर्ष तक सर्व शास्त्रवेत्ता बन गए थे।

शंकर ने गृहस्थ जीवन को त्यागकर सन्यासी का जीवन अपना लिया।वह आरंभ से ही संन्यास लेना चाहते थे और किसी ऐसे गुरु के

सानिध्य मे सीखना चाहते थे जो उन्हे सही रास्ता दिखा सके। एक बार वह हिमालय के बद्रीनाथ में एक आश्रम में स्वामी गोविंदपद आचार्य से मिले। उन्होंने अपने जीवन की कहानी बताई और उनसे स्वयं को एक शिष्य के रूप में स्वीकार करने के लिए अनुरोध किया। उन्होने शंकर से प्रसन्न होकर उन्हे संन्यास के पवित्र क्रम में अंगीकृत कर लिया। उन्होंने शंकराचार्य को अद्वैत का दर्शन सिखाया जो उन्होंने अपने गुरु गौड़पद आचार्य से सीखा था।

शंकराचार्य काशी गए और वहां उन्होंने ब्रह्मसूत्र, उपनिषदों और गीता पर अपनी टिप्पणी लिखी। उन्होंने अपने जीवन में बहुत यात्रा की, वह धार्मिक विद्वानों के साथ सार्वजनिक दार्शनिक शास्त्रार्थ में भाग लेते थे, उनकी शिक्षाओं का प्रचार करते थे और उन्होने कई मठों की स्थापना की। उन्हें हिंदू मठवाद के दसनामी सम्प्रदाय का संस्थापक माना जाता है।

आदि शंकराचार्य का दर्शन अत्यंत सरल और सीधा था। उन्होंने आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व की वकालत की। उन्होंने कहा कि मात्र परमात्मा ही वास्तविक है और अपरिवर्तित रहता है या बदला नहीं जा सकता है लेकिन आत्मा एक बदलती इकाई है और इसलिए इसका कोई पूर्ण अस्तित्व नहीं है।

मठों की स्थापना

आदि शंकराचार्यने भारत की भौगोलिक एकता स्थापित करने के बड़े और लंबे समय तक चलने वाले उद्देश्य के साथ चार मठों की स्थापना की–श्रिंगेरी शारदापीठम, द्वारिका पीठ, ज्योतिर्मठ पीठम और गोवर्धन मठ। श्री आदि शंकर भगवतपाद ने सनातन धर्म की पवित्र परंपरा को बनाए रखने और उसे बढ़ावा देने के लिए चारों मठों जिन्हे अमनाय मठ के नाम से जाना जाता है को स्थापित करके अपने कार्य को समेकित किया। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि मठों को सत्य के सभी साधकों के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और शांति के स्थानों के रूप में काम करना चाहिए, श्री शंकर ने प्राकृतिक भव्यता और शांति के स्थानों को चुना। श्री शंकर ने पूर्व में पुरी और पश्चिम में द्वारिका को चुना जो दोनों समुद्र के तट पर स्थित है। उन्होंने उत्तर में बद्रीनाथ और दक्षिण में श्रृंगेरी को भी प्राकृतिक आभा के लिए चुना, जो विशाल दर्शनीय पर्वतों और प्राकृतिक छटा से परिपूर्ण हैं।

श्री शंकर ने प्रत्येक मठाधीशों को एक–एक वेद सौंपा, जो यह दर्शाता है कि प्रत्येक मठ उस विशेष वेद को बनाए रखने और प्रचारित करने के प्रयासों को करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस प्रकार ऋग, यजुर, साम और अथर्व वेद क्रमशः पुरी, श्रृंगेरी, द्वारिका और बद्रीनाथ मठों को सौंपे गए। श्री शंकर ने अपने चार मुख्य शिष्यों को भी नामित किया, उन्होंने सूरीश्वर को श्रृंगेरी, पदमपाद को द्वारिका, हस्तमालाका को पुरी और टोटका को बद्रीनाथ को सौंपा। आज तक ये सभी मठ कार्य शंकर द्वारा अद्वैत वेदांत और सनातन धर्म के प्रचार के लिए शुरू किए गए आंदोलन की दृढ़ता को दर्शाते हैं।

मई एवं जून प्रमुख व्रत त्योहारों का विवरण

दिनांक	दिन	त्यौहार
1 मई	रविवार	श्रमिक दिवस
3 मई	मंगलवार	अक्षय तृतीय, भगवान परशुराम जयंती
10 मई	मंगलवार	सीता नवमी, श्रीजानकीजी प्रकटोत्सव
14 मई	शनिवार	नृसिंह प्रकटोत्सव
16 मई	सोमवार	बुद्ध पूर्णिमा
30 मई	सोमवार	वट सावित्री, सोमवती अमवस्या
2 जून	गुरुवार	महाराणा प्रताप जयंती
5 जून	ववार	पर्यावरण दिवस
9 जून	गुरुवार	गंगा दशहरा
21 जून	मंगलवार	विश्व योग दिवस

जेएनयू में नवरात्र में मांसाहार के पीछे आईसा

हिंदुओ के सबसे पवित्र व्रत नवरात्र में बेहद पवित्रता एवं संयम का व्यवहार किया जाता है। इस व्रत में हिंदू नमक एवं अन्न भी ग्रहण नहीं करते लहसुन और प्याज जैसी सब्जियों को भी इस समय खरीदा नहीं जाता। मां दुर्गा की अराधना के इस महापर्व का समापन राम नवमी के दिन होता है।

दिल्ली की जवाहर लाल नेहरु यूनिवर्सिटी में रामनवमी की पूजा के दिन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के छात्रों ने हवन एवं पूजा का कार्यक्रम आयोजित किया था। लगातार नौ दिनों तक व्रत रखने वाले छात्र इस हवन में शामिल होकर अपने व्रत का समापन करने वाले थे। एबीवीपी के छात्रों ने आपसे में चंदा एकत्र कर कावेरी और पेरियारहॉस्टल के बीच में हवन और पूजा का कार्यक्रम रखा था। पूरा माहौल राममय था और छात्र बड़ी संख्या में हवन में शामिल होने के लिए वहां एकत्र हुए थे।

वामपंथी विचारधारा वाले टुकड़े–टुकड़े गैंग के छात्रों को यह कार्यक्रम हजम नहीं हो रहा था लिहाजा वह किसी भी तरह से हवन एवं पूजा के कार्यक्रम को रोकना चाहते थे।

पूजा और हवन के लिए सैकडों छात्र–छात्राएं वहा जुटे थे कि वामपंथी छात्रों ने वहां हमला कर दिया। इस हमले में दिव्या नामक की छात्रा सहित कई लोग घायल हो गए। रविराज नामक के एक अन्य छात्र पर भी कांच की बोतल से हमला किया गया जिससे उन्हें गंभीर चोट आई। इस हमले के बाद एबीवीपी के छात्रों ने वामपंथी छात्रों की हिंसा का प्रतिकार किया और एकजुट होकर उन्हें वहां से दौड़ा दिया।

मामला को उल्टा पड़ते देखकर वामपंथी छात्रों ने कहना शुरू कर दिया कि एबीवीपी ने मेस में घुसकर वहां बन रहे मांसाहार का विरोध किया। वामपंथी छात्रों ने अचानक सारे प्रकरण को यूनिवर्सिटी मेस में मांसाहार खाने से जोड़ कर नया रुप देने की कोशिश की। जबकि उनका विरोध इस बात को लेकर था कि एबीवीपी जिस तरह से जेएनयू परिसर में अपना दबदबा कायम कर रही है उससे वामपंथी की जड़े दरक रही है जेएनयू में टुकड़े–टुकड़े गैंग की गतिविधियों को एबीवीपी के कार्यकर्ताओं ने पूरी से सीमित कर रखा है। रामनवमी के दिन यह उसी का प्रतिकार था जिसे मांसाहार से जोड़ दिया गया।

दरअसल जेएनयू में हिंदू विरोध, राष्ट्रविरोध और मोदी सरकार का विरोध वामपंथियोंद्वारा लगातार किया जा रहा है। विगत सात वर्षों से तो वामपंथी छात्र संगठन पूरी तरह से

पूर्वाग्रह से ग्रस्त होकर एबीवीपी पर किसी भी हमले के लिए तैयार रहते और बात–बात पर ढपली निकाल कर मार्च शुरू कर देते है।

दरअसल रामनवमी के दिन हवन एवं पूजा के कार्यक्रम में हजारों छात्र–छात्राओं को शामिल होता देख वामपंथी संगठन आपे से बाहर हो गए और मारपीट के प्रकरण को बड़ी चालाकी के साथ मांसाहार परोसने से जोड़ दिया। दूसरी तरफ एबीवीपी का कहना हैं कि यूनिवर्सिटी परिसर में रोजा इफ्तार का कार्यक्रम किया जाता है जिसका कोई विरोध नहीं होता फिर रामनवमी और हवन का विरोध क्यों किया जा रहा है। वामपंथी इसे नॉनवेज से जोड़कर मीडिया का ध्यान भटकाना चाहते हैं।

वामपंथी छात्र संगठन ऑल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन (आईसा) जेएनयू में अपना दबदबा चाहता है जबकि विगत कई वर्षों से परिसर में एबीवीपी के छात्रों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। आईसा को यह सब हजम नहीं हो रहा है कि जेएनयूवामपंथ के प्रभाव से निकल कर राष्ट्रवाद की सोच की तरफ बढ़ रहा है। दुर्भाग्य की बात यह हैं कि यूनिवर्सिटी के अनेक वामपंथी शिक्षक आईसा के छात्रों को भड़काने का काम करते। अगर पूर्व के प्रकरणों पर गौर करें तो छात्रों के बीच टकराव के पीछे शिक्षकों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

बोध कथा

भूखे प्यासे साधु के मन ने साधु को उकसाते हुए कहा – "काया को कष्ट क्यों देते हो? किसी घर में भीख मांग लो।" साधु अभी उस ओर मुड़ने ही वाले थे कि आत्मा मन की इस अज्ञानता का विरोध करती बोली – रुको! जिससे मांगोगे वह भी तो तुम्हारे जैसा ही होगा। तुम स्वयं ही कुछ अर्जित क्यों नहीं कर लेते?" अपनी झूठी दलील प्रस्तुत करते हुए साधु के मन ने साधु को भुसलाते लाते हुए पुनः कहा – "तुम तपस्वी हो अपरिग्रही हो, तुम्हें कमाना नहीं चाहिए।" मन के इस कुतर्क को काटते हुए आत्मा ने समझाया – "जो अपरिग्रह, परिग्रह का दास हो, उससे अच्छा परिग्रह ही है, जो कम से कम हाथ तो नहीं फैलाता।" साधु को आत्मा की बात विवेकपूर्ण लगी जिसे धारण कर उसने उस दिन से साधना – उपासना के साथ स्वावलंबी जीवन का अभ्यास भी आरंभ कर दिया।

श्लोक

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्धयेदकर्मणः।।

अर्थ– शास्त्रों में बताए गए अपने धर्म के अनुसार कर्म कर, क्योंकि कर्म नही करने की अपेक्षा कर्म करना श्रेष्ठ है। तथा कर्म नही करने से तेरा शरीर निर्वाह भी नहीं सिद्ध होगा।

व्यक्ति के जीवन में महत्व – श्रीकृष्ण भगवान अर्जुन के माध्यम से मनुष्यों को समझाते हैं कि हर मनुष्य को अपने धर्म के अनुसार कर्म करना चाहिए जैसे– विद्यार्थी का धर्म है विद्या प्राप्त करना, सैनिक का कर्म है देश की रक्षा करना। जो लोग कर्म नहीं करते, उनसे श्रेष्ठ वे लोग होते हैं जो अपने धर्म के अनुसार कर्म करते रहते हैं, क्योंकि बिना कर्म किए तो शरीर का पालन–पोषण करना भी संभव नहीं है। जिस व्यक्ति का जो कर्तव्य तय है, उसे वो पूरा करना चाहिए।

बच्चों के लिए 'उन्मुक्त गगन ड्रॉइंग प्रतियोगिता' का आयोजन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वाई पी इ (यूथ, प्रोफेशनल, एग्जीक्यूटिव) प्रभाग द्वारा रविवार 24 अप्रैल 2022 को त्रिनगर और केशव पुरम के बच्चों के लिए "उन्मुक्त गगन ड्रॉइंग प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय था "मेरा देश, मेरी संस्कृति"। इसमें छात्रों की आयु के अनुसार तीन आयु–वर्ग बनाए गये थे। इस प्रतियोगिता में 5 से लेकर 16 वर्ष आयु के करीब 85 छात्रों ने भाग लिया।

बच्चे हमेशा शब्दों का उपयोग करके खुद को व्यक्त नहीं कर सकते हैं, ड्राइंग अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण रूप है। इससे बच्चों में न सिर्फ रचनात्मकता आती है बल्कि इसके माध्यम से बच्चे देश और अपनी संस्कृति के प्रति अपनी भावना भी आसानी से व्यक्त कर सकते हैं।

इसी को ध्यान में रखते हुए बच्चों एवं अभिभावकों को देश और संस्कृति के प्रति जागरुक करने के उद्देश्य से संघ के स्वयंसेवकों द्वारा इस

प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।इसके लिए ऑनलाइन के साथ पार्कों और स्कूलों मे जा कर छात्रों एवं अभिभावकों से सीधा संपर्क साधा गया।इस प्रतियोगिता में 85 से बच्चों ने भाग लिया,जिसमे से 15 बच्चे सेवा भारती द्वारा संचालित सेवा बस्तियों से भी थे।

सभी विद्यार्थियों ने कल्पना की उँची उड़ान भरकर अपने भावों को कागज पर उतार दीया। किसी ने भारत माता का चित्र बनाया तो किसी ने भगवा ध्वज और राम मंदिर का और किसी ने भारतीय सेना का रंगो के मध्यम से अभिनंदन किया। ड्रॉइंग के बाद भारत से संबंधित एक छोटी प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन किया गया। आयु श्रेणी के अनुसार विजेता छात्रों को पुरस्कृत कर उत्साह– वर्धन किया गया। बच्चों को प्रेरणादायक पुस्तकें भी वितरित की गईं।

बाबा अम्बेडकर जयंती पर स्वास्थ्य जांच शिविर

भारत रत्न डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर जी की जयंती पर प्रताप खंड विश्वकर्मा नगर, विवेक विहार, शाहदरा में एन.एम.ओ संस्था के सहयोग से एक स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया जिसमें हिंदूराव हॉस्पिटल और गुरुतेग बहादुर हॉस्पिटल के डॉक्टरों ने भाग लिया। इस शिविर में मधुमेह और रक्तचाप की जांच की गई। नेत्रों की जांच शार्प साइट प्रीत विहार की टीम ने की। जिसमे मोतियाबिंद की भी जांच की गई। शिविर में दवाइयां भी दी गईं। शिविर में 125 व्यक्तियों की जांच की गई। व्यवस्था में करीब 15 कार्यकर्ता लगे। कार्यक्रम में संघ के सह–जिला कार्यवाह घनश्याम जी भी उपस्थित रहे।

चन्दन है इस देश की माटी

चन्दन है इस देश की माटी,
तपोभूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा,
बच्चा–बच्चा राम है।।

हर शरीर मन्दिर सा पावन,
हर मानव उपकारी है।
जहाँ सिंह बन गये खिलौने,
गाय जहाँ माँ प्यारी है।
जहाँ सवेरा शंख बजाता,
लोरी गाती शाम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा,
बच्चा–बच्चा राम है।।

जहाँ कर्म से भाग्य बदलते,
श्रम निष्ठा कल्याणी है।
त्याग और तप की गाथाएँ,
गाती कवि की वाणी है।।

ज्ञान जहाँ का गंगा जल सा,
निर्मल है अविराम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा,
बच्चा–बच्चा राम है।।

इसके सैनिक समर भूमि में,
गाया करते गीता हैं।
जहाँ खेत में हल के नीचे,
खेला करती सीता हैं।
जीवन का आदर्श यहाँ पर,
परमेश्वर का धाम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा,
बच्चा–बच्चा राम है।।

चन्दन है इस देश की माटी,
तपोभूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा,
बच्चा–बच्चा राम है।।

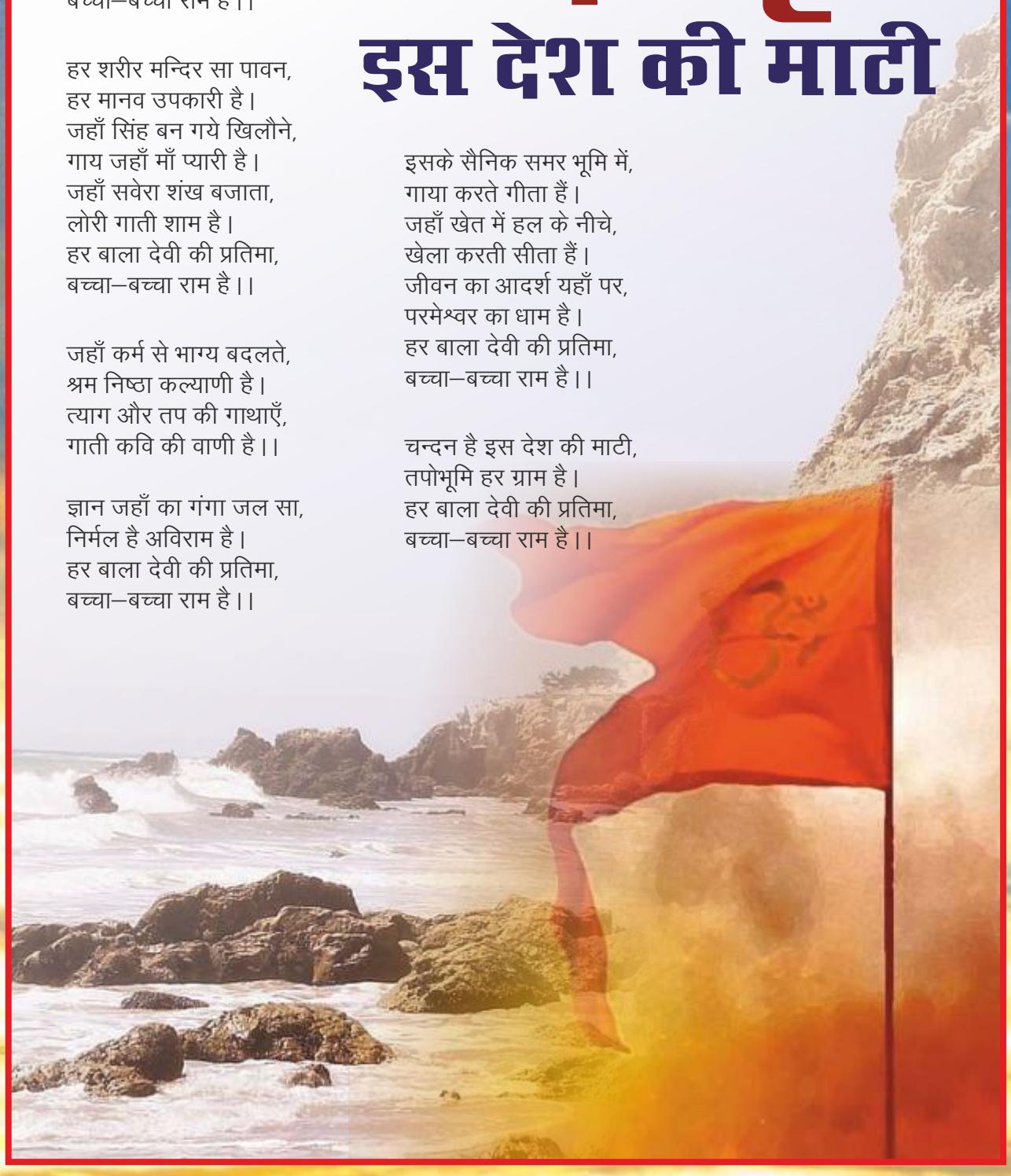

समाचार पत्र पंजी. संख्या : DELHIN/2018/76804
प्रकाशन तिथि : 01-05-2022
प्रेषण तिथि : 03-04 (मासिक)

डाक पंजीकरण संख्या : DL (C) 11/1437/2022-24
Posted at - New Delhi GPO, New Delhi-110001

जिस भारत की अस्सी प्रतिशत जनसंख्या हिन्दू है, उस देश मं बहुसंख्यक हिन्दुओं के धार्मिक शोभायात्रा पर हमला कैसे और क्यों? विचार करें!

प्रेषक : (इंद्रप्रस्थ संवाद, 8 बी/6428–29, प्रथम तल,
आर्यसमाज रोड, देवनगर, नई दिल्ली–110005)